स्वातंन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के विविध स्वरूप :एक अध्ययन

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

के कला संकायांतर्गत हिंदी साहित्य विषय में

पी-एच.डी. उपाधि पंजीयन हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

सत्र : 2015 –16

निर्देशक

डॉ. कैलाश शर्मा

विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)

इंदिरा गांधी शा. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य

महाविद्यालय वैशाली नगर, भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

सह–निर्देशक

डॉ. अभिनेष सुराना

प्राध्यापक (हिंदी विभाग)

शास. वि.या.ता. स्नातकोत्तर

स्वशासी महाविद्यालय,दुर्ग (छत्तीसगढ़)

शोधार्थी

सोमेश्वर प्रसाद राठौर

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,रायपुर (छत्तीसगढ़)

शोध–केंद्र

हिंदी विभाग

शास.वि.या.ता.स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,दुर्ग (छत्तीसगढ़)

स्वातंन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के विविध स्वरूप :एक अध्ययन

प्रस्तावित शोध–कार्य का प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य विचारों का समुच्चय भी है। ऐसे में प्रायः विचारक, दार्शनिक, चिंतक, लेखक एवं सर्जक व्यक्तित्व साहित्य को युगों तक प्रभावित करते हैं। यूरोप के पुनर्जागरण में वहाँ के दार्शनिक एवं चिंतक साहित्यकारों ने महती भूमिका निभाई है। इनकी लेखनी से सबल विचारधारा ने समाज को सोचने एवं समझने की नई दृष्टि प्रदान की, जिसका परिणाम राष्ट्रवाद के उदय से लेकर व्यवस्था के बदलाव हेतु क्रांति की अगुवाई तक में दिखता है। यह दुरगामी प्रभाव है। सदियों वर्ष बाद भारतवर्ष के स्वाधीनता के महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की प्रिय पुस्तक रही तथा अपने व्यक्तित्व एवं संघर्ष क्षमता पर इस साहित्य के प्रभाव को उन्होंने बरबस स्वीकार किया है, तात्पर्य यह कि ओजपूर्ण विचारधारा, प्रभावोत्पादक साहित्य एवं युगसर्जक व्यक्तित्व समय निरपेक्ष रूप से प्रासंगिक बने रहते हैं तथा समाज एवं साहित्य पर उनका प्रभाव सामने आता रहता है।

विचारधारा का अर्थ विचारों के समांगी समुच्चय से है जो एक निश्चित दृष्टि एवं दर्शन को प्रतिपादित करते हैं। इसमें तार्किकता, भविष्यदृष्टि समाजोपयोगिता, भावप्रवणता, नूतन की संकल्पना, सृजनात्मकता आदि आधार अवयव होते हैं। प्रायः व्यक्ति या संगठन किसी विशेष विचारधारा के प्रवर्तक होते है जिसके पीछे नूतनता के आग्रही समाज की सामूहिक शक्ति रहती है। लिपिबद्ध विचारधारा सनातन रूप से साहित्य के पाठकों को प्रभावित करती है तथा अपने प्रभाव से निःसृत, नये साहित्य की रचना का माध्यम बनती है। इसके उदाहरण हर समय हर काल में उपलब्ध है जैसे– कार्ल मार्क्स के ''दास कैपिटल'' अथवा उनके तत्संबंधी मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित कई लेखकों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया हैं। प्रेमचन्द कभी सोवियत संघ नहीं गये किन्तु विचारधारा एवं साहित्य से वे प्रभावित रहे तथा इनकी स्पष्ट झलक उनके विभिन्न रचनाओं एवं पुस्तकों में मिलती है।

19 वीं सदी के भारत में नवजागरण की शुरूआत हुई, नवजागरण के लहर में भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर समाज सुधार के प्रयत्न हुए, समाज में व्याप्त रूढ़िवादी, संकीर्णता, सतीप्रथा का उन्मूलन, विधवा विवाह को कानूनी मान्यता, बाल विवाह पर रोक आदि जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। महिलाओं को शिक्षा के दायरे में लाकर तथा उन्हें शिक्षित करके मुख्य राष्ट्रीयधारा से जोड़ने का प्रयास किया गया। राजाराम मोहनराय, ईश्वरचंद विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, दयानंद सरस्वती, स्वामी

विवेकानंद आदि दार्शनिक एवं समाज सुधारकों ने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादी कुसंस्कार के ढांचे में बदलाव करने के लिए समाज को आधुनिकता में रूपान्तरित होने के लिए प्रेरित किया।

उपन्यास साहित्य की अत्यन्त सशक्त विधा है, साहित्य प्रेम राष्ट्र के लोगों के लिए अनुकरणीय है। बंगाल के लेखकों ने हिंसा को हिंदी उपन्यासों में जगह दी और उनकी मूल समस्याओं को लोगों के सामने रखा.

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भारत के स्वातंन्त्र्योत्तर उपन्यासों में हिंसा की उत्पत्ति एवं उससे प्रभावित राज्यों की विवेचना की जाएगी तथा हिंसा के समाधान हेतु शासन एवं प्रशासन ने क्या प्रयास किए और वर्तमान में भारत के सम्मुख सामाजिक हिंसा सबसे गंभीर आतंरिक समस्या क्यों बनी हुई है? इन्हीं समस्याओं पर समस्या–समाधान के लिए विचार–विमर्श प्रस्तुत करना.

हिंसा देश में वर्तमान समय की प्रमुख आतंरिक ज्वलंत मुद्दा है। जो भारत के आतंरिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है। हिंसा आज समाचार पत्र, पत्रिकाओं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि में विचार–विमर्श का प्रमुख मुद्दा बना हुआ है। जो आज देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रुप से राष्ट्र के विकास के मार्ग को अवरूद्ध कर रहा है.

प्रस्तावित शोध–कार्य की सीमाएँ :

प्रस्तावित शोधकार्य में स्वातंन्त्र्योत्तर उपन्यासों में हिंसा तथा उसके पृष्ठभूमि से संबंधित उपन्यासों को शामिल किया जाना प्रस्तावित है। इस विषय की गंभीरता और सूक्ष्म अध्ययन की दृष्टि से इन उपन्यासों की कथा शिल्प संवाद एवं भाषा शैली का अध्ययन करते हुए हिंदी उपन्यास के हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों का अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है.

प्रस्तावित शोधकार्य में निम्नलिखित प्रमुख उपन्यासों को शामिल किया जाना है :

1. मैला आँचल पहला संस्करण (1954)
2. झूठा सच (देश का भविष्य)प्रथम संस्करण (1960)
3. आधा गांव प्रथम प्रकाशन (1966)
4. आपका बंटी प्रथम प्रकाशन (1971)
5. तमस प्रथम संस्करण (1974)
6. तेरी मेरी उसकी बात प्रथम प्रकाशन (1974)

पूर्व शोध–कार्य की पुनरावलोकन :

किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व उस विषय से संबंधित साहित्यिक पुनरावलोकन अति आवश्यक होता है। साहित्यिक पुनरावलोकन कर लेने से शोध कार्य में सरलता आ जाती है और शोधकर्ता को छोटे–छोटे बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। शोधार्थी को चाहिए कि साहित्यिक पुनरावलोकन करते समय यह ध्यान रखे कि उसका शोध विषय पूर्ण हो जाए। जिस विषय पर वर्तमान में शोध हुए है उनका अध्ययन कर लेना चाहिए क्योंकि वे वर्तमान अध्ययन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं और कार्य को अग्रसर करने के लिए दिशा निर्देश दे सकते हैं.

किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान होता है, जिस पर सम्पूर्ण भावी शोध आधारित होता है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नीव को दृढ़ नहीं कर लेते तो यह शोधकार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना बनी रहती है अथवा पुनरावृत्ति की संभावना होता हैं.

साहित्य सर्वेक्षण से तात्पर्य इस समस्या से संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, व्यक्तिगत साक्षात्कार, ज्ञानकोशों, प्रकाशित शोधप्रबंधों, अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि का अध्ययन कर लेने से है.

हिंदी साहित्य में स्वातंन्योत्तर उपन्यासों में हिंसा पर स्वतंत्र रुप से यह प्रथम अनुसंधान कार्य है.

प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य :

शोध का उद्देश्य उन धारणाओं और मान्यताओं को पहचानना जिनसे आज इन हिंसक आंदोलन को धन और हथियार कहां से मिलता है, सामाजिक हिंसा बढ़ने के कारण जैसे प्रश्नों का उत्तर खोजना इस शोध का मूल उद्देश्य है.

जिस उद्देश्य से हिंसा जैसे विचारधारा उपजी है वह उद्देश्य अब कहीं दिखायी नहीं देता। हिंसक क्रांति ने अब अपराध और आतंक का रास्ता अपना लिया है, वहां शिक्षा और विकास के माध्यम से तथा उनके समस्याओं का निराकरण करके ही हिंसा को दूर किया जा सकता है। अभी भी गांवो में गरीबी और शोषण का राज है.

प्रस्तुत शोध–कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. हिंदी उपन्यासों में हिंसा की भूमिका का मूल्याकंन करना.
2. उपन्यासों में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्याओं का अध्ययन.
3. हिंदी उपन्यासों में वनवासी, मजदूर किसानों की भूमिका का विश्लेषण.

4. हिंदी उपन्यासों में जातिगत हिंसा जिसमें जाति और हिंसा के स्वरूप का अध्ययन.
5. हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक हिंसा का मूल्यांकन करना.
6. हिंदी उपन्यासों में युवा वर्ग की भूमिका का अध्ययन करना.

प्रस्तावित शोध–कार्य का महत्व एवं उसकी उपादेयता :

उपन्यास केवल काल्पनिक गद्य ही नहीं बल्कि मानव जीवन का आधार है। उपन्यास का अर्थ कथा के माध्यम से व्यक्त होने वाला जीवन चित्र जो स्थान विशेष या स्थान सामान्य से संबंध होकर सर्वदेशीय मानव संवेदनाओं और मूल्यों की प्रतिष्ठा करें। किसी अंचल विशेष या राज्य विशेष के लोक जीवन शैली, उसकी आस्था, भाषा, कलारूची, रूढ़ियॉ, गीत–नृत्य और अन्य सांस्कृतिक बनावट को उपन्यासकार अपने विशिष्ट उद्देश्यों के आधार पर रचता है.

प्रस्तावित शोध कार्य में स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में हिंसा की पृष्ठभूमि, परिवेश और वातावरण का कितना सदुपयोग इन उपन्यासों में हैं, इसका भी अध्ययन किया जाना है। यह आश्चर्य का विषय है कि हिंसा से संबंधित हिंदी उपन्यासकारों के अवदान का अब तक ठोस मूल्यांकन नहीं हुआ है, इसी प्रकार हिंसा के गद्य साहित्य विशेषकर उनके उपन्यासों पर अनुसंधान कार्य नहीं हो पाया है। यह अनुसंधान कार्य इन कमियों को पूरा करेगा और अपनी उपादेयता सिद्ध करने का प्रयास करेगा.

प्रस्तावित शोध–कार्य की अनुसंधान–प्रविधि :

प्रस्तावित शोधकार्य हेतु निम्नलिखित अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है –

1. चयनित हिंदी साहित्य के प्रतिनिधि उपन्यासों पर विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रस्तावित.
2. देश एवं राज्य के महत्चपूर्ण ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों, शोध ग्रंथों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित संबंधित सामग्री का अन्वेषण.
3. वेबसाइट, ब्लॉग इत्यादि में उपलब्ध संबंधित सामग्री का अन्वेषण.
4. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा से संबंधित अन्य पुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन.
5. विभिन्न समाचार पत्रों में लेखक एवं हिंसा के संबंध में प्रकाशित आलेखों का अन्वेषण.
6. अन्य प्रणाली जिसकी समय पर आवश्यकता परिलक्षित हो.

प्रस्तावित शोध–कार्य का संभावित निष्कर्ष :

आज भी कई क्षेत्रों में आधारभूत संरचना, यातायात, सड़क, स्वच्छ जल, आवास, बिजली, स्वास्थ्य व शिक्षा जैसी प्राथमिक सुविधाओं से वंचित है। केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा वहां विकास की योजनाये बनाई गयी, लेकिन वह नेताओं व अधिकारियों के कार्यालयों व फाइलों में दबकर रह गयी और उनका क्रियान्वयन सही ढंग से नहीं किया गया। जिन हाथों में कलम होनी चाहिए थी आज उन हाथो पर हथियार आ गये अतः आज यह गम्भीर आंतरिक समस्या देश के सम्मुख है।

वर्तमान हिंसा के सिद्धान्तों एवं कार्यप्रणाली में भी अन्तर आया है जो क्रान्ति, रोटी, कपड़ा और मकान, स्वास्थ्य, शिक्षा के लिए शुरू हुई थी वह आज हिंसक रूप धारण कर चुकी है। इसमें कुछ तथाकथित राजनेता भी शामिल है जो हिंसा की चिंगारी को भड़काकर अपनी स्वार्थ की राजनीति करते हैं, अतः यह कहना गलत न होगा कि अशिक्षित, गरीब, मजदूर, बंधुआ मजदूर, असहाय लोगों के पीछे किसी शिक्षित व स्वार्थी लोगों का हाथ है, सरकार को उन्हें चिन्हित कर कड़ा से कड़ा दण्ड देना चाहिए और उन क्षेत्रों में विकास की गति को बढ़ाना चाहिए। योजनाओं को सुचारू रूप से क्रियान्वित कर वंचितो को अधिक से अधिक लाभ दिया जाना चाहिए। शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर लोगों को देश व विकास की मुख्य धारा से जोड़ना चाहिए इसमें सरकार व उसकी विभिन्न ऐजेंसियों, समाज सेवको व विभिन्न संस्थाओं, सरकारी कर्मचारी तथा आम जनता को भी भागीदारी करनी चाहिये तभी इस समस्या का समाधान पाया जा सकता है और देश में सौहार्द, शान्ति एवं विकास के वातावरण का सृजन होगा.

प्रस्तावित शोध–कार्य में निम्नलिखित निष्कर्ष की संभावना है :–

1. हिंदी उपन्यासों में हिंसा के सिद्धान्तों एवं कार्यप्रणाली का मूल्यांकन करना.
2. हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिकता और हिंसा का मूल्यांकन करना.
3. हिंदी उपन्यासों में जातिगत हिंसा का विश्लेषण करना.
4. हिंदी साहित्य में जातिगत हिंसा की राजनैतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन.
5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के स्वरूप का अध्ययन करना.
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के सास्कृतिक प्रभाव का अध्ययन.
7. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों का विस्तृत अध्ययन करना.
8. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन.
9. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के आर्थिक प्रभाव का अध्ययन.
10. हिंसा में शिक्षित युवा वर्ग की भूमिका का विश्लेषण कर मूल्यांकन करना.
11. हिंदी उपन्यासों में सामाजिक हिंसा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना.

स्वातंन्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा के विविध स्वरूप :एक अध्ययन

प्रस्तावित शोध – प्रारूप

1.1 शोध कार्य की प्रस्तावना

1.2 शोध–कार्य की परिकल्पना

1.3 शोध–कार्य का उद्‌देश्य एवं महत्व

1.4 शोध–कार्य की सीमाएँ एवं प्रविधि

1.5 हिंदी उपन्यासों में हिंसा की भूमिका

1.6 प्रस्तावित शोध–कार्य की संभावित निष्कर्ष

प्रथम अध्याय : हिंदी उपन्यासों में हिंसा की अवधारणा और साहित्य में उसकी उपस्थिति

1.1 स्वातंन्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा की अवधारणा

1.2 हिंदी साहित्य में हिंसा का स्वरूप : सामान्य परिचय

1.3 स्वातंन्योत्तर हिंदी उपन्यासों में हिंसा की भूमिका

द्वितीय अध्याय : ***स्वातंन्योत्तर हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक हिंसा के स्वरूप***

2.1 हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक हिंसा का स्वरूप

2.2 हिंदी साहित्य में एकल परिवार में हिंसा के कारण

2.3 हिंदी उपन्यासों में सयुक्त परिवार को लेकर हिंसा का स्वरूप

तृतीय अध्याय : स्वातंन्योत्तर हिंदी उपन्यासों में सामाजिक हिंसा के परंपरागत मूल्यों का स्वरूप

3.1 हिंदी उपन्यासों में सामाजिक हिंसा का स्वरूप

3.2 हिंदी साहित्य में सामाजिक हिंसा का समाज पर प्रभाव का मूल्यांकन

3.3 हिंदी उपन्यासों में *मान –सम्मान व प्रतिष्ठा के लिए* ***अध्ययन***

3.4 हिंदी उपन्यासों में परम्परागत मूल्यों के संरक्षण पर अध्ययन

चतुर्थ अध्याय : स्वातंन्योत्तर हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक हिंसा का स्वरूप

4.1 हिंदी साहित्य में राजनैतिक हिंसा के कारण और स्वरूप

4.2 राजनैतिक प्रतिष्ठा के लिए हिंसा का मूल्यांकन

4.3 राजनैतिक हिंसा में युवा वर्ग की भूमिकाओं का स्वरूप

पंचम अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में आर्थिक हिंसा का स्वरूप

5.1 हिंदी उपन्यासों में आर्थिक हिंसा के स्वरूप का अध्ययन

5.2 हिंदी उपन्यासों में हिंसा के आर्थिक एवं सास्कृतिक प्रभाव का अध्ययन

5.3 हिंदी उपन्यासों में आर्थिक आधार पर हिंसा के स्वरूप का मूल्यांकन

षष्ठम अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में धार्मिक हिंसा का स्वरूप

6.1 हिंदी उपन्यासों में धार्मिक आधार पर हिंसा का स्वरूप

6.2 हिंदी उपन्यासों में साम्प्रदायिकता के आधार पर हिंसा के स्वरूप

6.3 हिंदी उपन्यासों में जाति के आधार पर हिंसा के स्वरूप का मूल्यांकन

6.4 निष्कर्ष

उपसंहार

परिशिष्ट :

आधार–ग्रंथ–सूची

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

पत्र–पत्रिकाएँ

वेबसाइट

आधार –ग्रंथ– सूची :

1. यशपाल.झूठा सच. (देश का भविष्य).इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन,1960.
2. रजा, राही मासूम. आधा गाँव. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1966.
3. यशपाल.तेरी मेरी उसकी बात. सिंह. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1974.
4. साहनी, भीष्म. तमस. नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., सातवॉ संस्करण:1992.
5. भंडारी, मन्नू. आपका बंटी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2000.
6. रेणु, फणीश्वरनाथ.मैला आँचल. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन. नौवाँ संस्करण 2008.

संदर्भ–ग्रंथ–सूची :

1. यशपाल.झूठा सच. (वतन और देश).इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन,1958.
2. रेणु, फणीश्वरनाथ. परती परिकथा. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन,1957.
3. अमरकांत.इन्हीं हथियारों में. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2008.
4. अज्ञेय,सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन. अपने–अपने अजनबी. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,2008.
5. शुक्ल, श्रीलाल.राग दरबारी. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., प्रथम प्रकाशन.1968.
6. शानी. काला जल. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2007.
7. मिश्र, वैद्यनाथ(नागार्जुन). रतिनाथ की चाची. नई दिल्ली. सरस्वती विहार प्रकाशन. 1948.
8. मिश्र, वैद्यनाथ(नागार्जुन). नई पौध. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.:2007.
9. मिश्र, वैद्यनाथ(नागार्जुन). बलचनमा. वाणी प्रकाशन, 2002.
10. राघव, रागेय. कब तक पुकारूं.राजपाल एंड सन्स प्रकाशनः 1985.
11. अवस्थी, राजेंद्र. जंगल के फूल. राजपाल प्रकाशन,1996.
12. मिश्र, वैद्यनाथ(नागार्जुन). वरूण के बेटे. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1957.
13. मिश्र, वैद्यनाथ(नागार्जुन). बाबा बटेसरनाथ. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2009.
14. भट्ट, उदयशंकर. सागर लहरे और मनुष्य. आत्माराम एंड सन्स प्रकाशन, 2004.
15. गुप्त, भैरवप्रसाद.गंगा मैया. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2013.
16. सिंह, शिव प्रसाद. गली आगे मुड़ती है. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2008.
17. यादव, राजेंद्र. उखड़े हुए लोग. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2007.
18. यादव, राजेंद्र. भंडारी, मन्नू. एक इंच मुस्कान. राजपाल एंड सन्स प्रकाशन, 2003.
19. राय, अमृत. नागफनी का देश. भारतीय साहित्य प्रकाशन,2012.
20. कुमार, अभय. क्रान्ति का आत्म संघर्ष. नई दिल्ली. विनय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1991
21. गुप्त, भैरवप्रसाद.सत्तीमैया का चौरा. नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन समूह. 2013.
22. चन्द्र,विपिन.भारत का स्वतंत्रता संघर्ष. दिल्ली.हिन्दी निदेशालय, दिल्ली.
23. गुप्त डॉ. परशुराम. सैन्य मनोविज्ञान. नई दिल्ली. प्रकाश बुक डिपो, 2000.
24. सुरी, कुलदीप सिंह. जंगल के संतान. विश्वभारती प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2009.
25. यशपाल. अंधेरी गली का मकान. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
26. मिश्र, रामदरश.जल टूटता हुआ. नई दिल्ली.वाणी प्रकाशन. 2005.

पत्र–पत्रिकाएँ :

1. हंस मासिक, संपादकःराजेन्द्र यादव. नई दिल्ली.
2. समीक्षा, संपादकःगोपाल राय. नई दिल्ली.
3. साप्ताहिक हिंदुस्तान. नई दिल्ली.
4. साहित्य अमृत, नई दिल्ली.
5. इंडिया टुडे, नई दिल्ली.
6. कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली.
7. प्रतियोगिता दर्पण, आगरा.
8. योजना, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ,नई दिल्ली.
9. आउट लुक, नई दिल्ली.
10. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, नई दिल्ली.
11. लोकयुद्ध समकालीन, पटना.
12. चाणक्य सिविल सर्विसेज, नई दिल्ली.

समाचार–पत्र :

1. द हितवाद, रायपुर (छ.ग.).
2. पत्रिका, रायपुर (छ.ग.).
3. हरिभूमि, रायपुर (छ.ग.).
4. नवभारत, रायपुर (छ.ग.).
5. नई दुनिया, रायपुर (छ.ग.).

6.दैनिक भास्कर, रायपुर (छ.ग.).

7\. दैनिक भास्कर, रायपुर (छ.ग.).

7\. टाईम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली.

8\. हिन्दुस्तान टाइम्स ,नई दिल्ली.

वेबसाइट :

1. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट कविताकोश डॉट ओ आर जी
2. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट हिंदीनेस्ट डॉट कॉम
3. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट साहित्यकुंज डॉट नेट
4. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट समकालीनसाहित्य डॉट कॉम
5. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट हिंदीसेवा डॉट कॉम
6. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट हिंदीसमय डॉट कॉम
7. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट नक्सलीटेरेज डॉट कॉम
8. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट विकीपिडिया डॉट ओ आर जी

निर्देशक	सह–निर्देशक	शोधार्थी
डॉ. कैलाश शर्मा	डॉ. अभिनेष सुराना	सोमेश्वर प्रसाद राठौर
विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)	प्राध्यापक (हिंदी विभाग)	साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
इंदिरा गांधी शा. कला, विज्ञान	शास. वि.या.ता. स्नातकोत्तर	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
एवं वाणिज्य महाविद्यालय	स्वशासी महाविद्यालय,दुर्ग (छ.ग.)	रायपुर (छ.ग.)
वैशाली नगर, भिलाई (छ.ग.)		

प्राचार्य

शास़.वि.या.ता.स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,दुर्ग (छत्तीसगढ़)

वेबसाइट :

1. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट कविताकोश डॉट ओ आर जी
2. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट हिंदीनेस्ट डॉट कॉम
3. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट साहित्यकुंज डॉट नेट
4. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट समकालीनसाहित्य डॉट कॉम
5. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट हिंदीसेवा डॉट कॉम
6. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट हिंदीसमय डॉट कॉम
7. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट नक्सलीटेरेज डॉट कॉम
8. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट विकीपिडिया डॉट ओ आर जी

निर्देशक

डॉ. कैलाश शर्मा

विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)

इंदिरा गांधी शा. कला, विज्ञान

एवं वाणिज्य महाविद्यालय

वैशाली नगर, भिलाई (छ.ग.)

प्राचार्य

इन्दिरा गांधी शा. कला, विज्ञान

एवं वाणिज्य महाविद्यालय

वैशाली नगर, भिलाई (छ.ग.)

सह–निर्देशक

डॉ. अभिनेष सुराना

प्राध्यापक

शास. वि.या.ता. स्नातकोत्तर

स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

सोमेश्वर प्रसाद राठौर

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर (छ.ग.)

शोध–केंद्र

Principal 27-2-2017

Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous

College, Durg (C.G.)

शास.वि.या.ता.स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)